मानव जीवन की सार्थकता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

चौरासी लाख जीवन योनियों में मानव सर्वश्रेष्ठ है। मानव एक पंचेन्द्रिय प्राणी है। चेतना का पूर्ण विकास मानव में हुआ है। ठीक ही कहा गया है कि **बड़े भाग्य मानुष तन पावा** अर्थात् मनुष्य का शरीर बड़े पुण्य कर्म के पश्चात् ही प्राप्त होता है। मानव जीवन बड़ा ही दुर्लभ है। अनेक पुण्य कर्मों को करने के पश्चात् जीव को मनुष्य योनि प्राप्त होती है। मनुष्य योनि कर्मयोनि हैं। एक इन्द्रिय वाले जीव, दो इन्द्रिय वाले जीव, तीन इन्द्रिय वाले जीव, चार इन्द्रिय वाले जीव इन्द्रिय विकल कहलाते हैं, क्योंकि संपूर्ण इन्द्रियां इन जीवों में नहीं हैं। पंचेन्द्रिय प्राणियों में मानव ही सर्वश्रेष्ठ है। पशुओं में भी पांच इन्द्रियां होती हैं, किन्तु सोचने विचारने की क्षमता उनमें नहीं होती। मानव और पशु में यही अंतर है कि मानव ज्ञान संपन्न है। उसमें सोचने विचारने की क्षमता है, इसलिए मानव सर्वश्रेष्ठ है। मानव तन पाकर यदि मानव में मानवता का विकास न हो तो वह पशु से भी वदतर है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर एक दूसरे के सुख–दुःख से प्रभावित होना उसका धर्म है। यही कुछ ऐसी बातें हैं, जो कि मानव को अन्य पंचेन्द्रिय प्राणियों से अलग करती है। मानव का सार है मनुष्यता, जो हर मनुष्य में पायी जाती है। इसे सुरक्षित रखना और सभी प्राणियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाये रखना मानव का परम कर्त्तव्य है। मानव एक धर्मनिष्ठ प्राणी है। उसे अपने मन को शिव संकल्पों से युक्त करना चाहिए। धर्म इसी आवश्यकता का प्रतिपादन करने के लिए है। मन को सत्यम् से, वाणी को शिवम् से और चरित्र को सुन्दरम् से युक्त करने का उपक्रम है धर्म।

मनुष्यता ही विश्व में मानव को सर्वोच्च स्थान प्रदान करती है तथा मानवप्रकृति के उस पक्ष पर बल देती है जो प्रेम, मैत्री, दया सहयोग के रूप में अभिव्यक्त होती है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की संवेदना व दया, करुणा का भाव समस्त सृष्टि के जीवधारियों के लिए होता है।

अतः अहिंसा इस दर्शन की प्रतिष्ठा के लिए सबसे अनिवार्य शर्त हैं। मानव जीवन में कर्म को पूर्ण महत्व दिया गया है और यह स्वीकार किया गया है कि मानव की श्रेष्ठता का आधार, विकास का आधार जन्म लेने मात्र से नही अपितु कर्म पर आधारित है। प्रत्येक किया गया कर्म मानव के जीवन में निश्चित परिणाम देता है।

मनुष्य प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। मनुष्य में मानवता होनी चाहिए। यदि मनुष्य में मानवता नहीं है तो वह पशु से भी बदतर है। इस संसार में एक इन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीव पाये जाते है। चेतना का अन्तर सभी प्राणियों में स्पष्ट दिखलायी देता है। इन सभी प्राणियों में मनुष्य सबसे अधिक विकसित है। उसमें बुद्धितत्व है। बुद्धितत्व के कारण चिंतनशीलता, विवेकशीलता का गुण उसमें है। ज्ञान केवल मनुष्य में है अन्य प्राणियों में नहीं। धार्मिक क्रियाकलाप, सामाजिक क्रियाकलाप इत्यादि भावना केवल मनुष्य में दिखलायी पड़ती है। प्रकृति ने मनुष्य को बहुत कुछ दिया है। मानव का यह कर्त्तव्य है कि प्रकृति के खजाने को सुरक्षित रखे। यदि मनुष्य प्रकृति का संरक्षण करता रहेगा तो प्रकृति भी उसका संरक्षण करेगी। समाज से आदान–प्रदान, भाईचारा, सौहार्द्र, सहानुभूति, समता, उदारता से रहना उसका कर्त्तव्य है। समाज में किसी का शोषण न हो। राष्ट्र निर्माण में सबका योगदान हों जिससे स्वस्थ समाज का निर्माण हो सके। भेद–भाव की खांई को समाप्त करने के लिए सबको मिलकर के प्रयास करना चाहिए।

जन्म के समय सभी समान होते है। किन्तु पैदा होने के बाद सम्प्रदाय की छाप लगा दी जाती है। यह सम्प्रदाय ही एक ऐसा तत्व है जो मानव–मानव में भेद कर देता है। जन्म के समय बच्चा कोरे कागज के समान होता है। परिवार और समाज में जो सीख उसे दी जाती है, वह वैसा ही बन जाता है। हिन्दू परिवार में जन्मा हुआ बच्चा हिन्दू संस्कारों में पलता है और मुस्लिम समाज में पैदा हुआ बच्चा मुस्लिम संस्कारों से फलता–फुलता है। इसी प्रकार जैन, बौद्ध, सिक्ख, ईसाई परिवारों में जन्म लेने वाले बच्चे धर्मानुकूल सामाजिक वातावरण में बड़े होते हैं। सम्प्रदाय भेद पैदा करता है और धर्म एकरूपता दिखलाता है। सभी प्राणी सुख से जीना चाहते हैं, कोई भी प्राणी दुःख नहीं चाहता। फिर भी सुख–दुःख आत्मकर्तृत्व के आधार पर भोगने पड़ते हैं। जिससे यह सिद्ध होता है कि पुर्वजन्म में किये हुए कर्म भी मानव को इस

जन्म में भोगने पड़ते हैं। प्रकृति सबके साथ समान व्यवहार करती है और एकता का संदेश देती है। पृथ्वी, जल, वायु और आकाश का आनन्द सब समान रूप से लेते हैं। सूर्य का प्रकाश सभी समान रूप से लेते हैं कोई कम या ज्यादा ग्रहण नहीं करता है। इससे यह ज्ञात होता है कि प्रकृति सबकी है और सब प्रकृति के हैं तो भेद किस बात का है।

सभी मनुष्य का रक्त समान होता है, मलमूत्र समान होता है, सभी मानव जाति से उत्पन्न हैं तो मनुष्य में अंतर किस बात का। यह अंतर मानवकृत है ईश्वरकृत नहीं। ईश्वर की दृष्टि में सब समान है। **हरि का भजै सो हरि का होई** जो ईश्वर का भजन करता है वही ईश्वर का हो जाता है। मानव न कुछ लेकर आया है और न कुछ लेकर जायेगा। उसका धर्म और पुण्य–पाप कर्म ही उसके साथ जाता है। इसलिए सभी प्राणियों में आत्मदर्शन करना और सभी प्राणियों को अपने समान मानना ही मानव जीवन की सार्थकता है।